अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 17 जुलाई, 2022)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1 = (15)

(a) प्रतिक्रमण की आज्ञा लेने का पाठ है-
(क) इच्छामि ठामि (ख) इच्छामि णं भंते
(ग) इच्छामि खमासमणो (घ) देवसिय पायच्छित्त (ख)

(b) संसार में सच्चे शरण के रूप में नहीं लिया है-
(क) अरिहंत को (ख) सिद्ध को
(ग) श्रावक को (घ) केवली प्ररूपित धर्म को (ग)

(c) तिर्यंचायु के बंध का कारण है-
(क) अज्ञान तप (ख) वचन की वक्रता
(ग) मद्य-मांस का सेवन (घ) असत्य वचन बोलना (घ)

(d) तीन उपयोग लेकर आते हैं और तीन उपयोग लेकर निकलते हैं-
(क) सातवीं नरक (ख) पाँच स्थावर
(ग) तीन विकलेन्द्रिय (घ) पाँच अनुत्तर विमान (ख)

(e) शान्तिनाथ भगवान ने मेघरथ राजा के भव में किसके प्राण बचाये -
(क) खरगोश (ख) हाथी
(ग) कबूतर (घ) बाज (ग)

(f) श्रावक-श्राविका से क्षमा याचना इस पाठ से की गई है-
(क) अढ़ाई द्वीप पन्द्रह क्षेत्र (ख) क्षमापना पाठ
(ग) 84 लाख जीवयोनि (घ) आयरिय उवज्झाय (क)

(g) किस गाँठ के गलने पर ज्ञान का प्रकाश होता है -
(क) ममता (ख) रोग-शोक
(ग) क्रोध-मद (घ) मोह-मिथ्यात्व (घ)

(h) ''इत्र'' किस बोल में आता है-
(क) विलेपन (ख) कुसुम
(ग) उपानत (घ) ताम्बूल (ख)

(i) श्रावक तृष्णा पर अंकुश लगाने हेतु कौनसे व्रत की मर्यादा करता है-
(क) चौथा (ख) पाँचवाँ
(ग) छठा (घ) सातवाँ (ग)

(j) मूँग, मोठ आदि के अंकुर निकलने के कितने समय बाद काम में लेने पर अनंतकाय का दोष नहीं लगता है-
(क) 24 मिनट (ख) 24 घण्टे
(ग) 48 मिनट (घ) 24 घड़ी (क)

(k) पक्खी के प्रतिक्रमण में लोगस्स का ध्यान किया जाता है-
(क) 4 (ख) 12
(ग) 20 (घ) 8 (घ)

(l) उपशम सम्यक्त्व से गिरती हुई अवस्था को कहते हैं-
(क) उपशांत मोहगुण (ख) सास्वादन गुणस्थान
(ग) मिथ्यात्व गुणस्थान (घ) मिश्र गुणस्थान (ख)

(m) तिर्यंच गति में सबसे कम संज्ञा होती है-
(क) आहार (ख) भय
(ग) मैथुन (घ) परिग्रह (घ)

(n) प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासन काल में ही पाया जाने वाला चारित्र है-
(क) सामायिक (ख) सूक्ष्म सम्पराय
(ग) छेदोपस्थापनीय (घ) यथाख्यात (ग)

(o) एक गुण जो अरिहन्त और सिद्ध दोनों में पाया जाता है-
(क) भामण्डल (ख) निराबाध सुख
(ग) अशोक वृक्ष (घ) अनंत ज्ञान (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) देसावगासिक व्रत से 14 नियम ग्रहण किये जाते हैं। (हाँ)
(b) मुनि पद की ऊँची भूमिका में विचरण करना दूसरा मनोरथ है। (हाँ)
(c) भगवान शांतिनाथजी एक माह तक छद्मस्थ अवस्था में विचरे। (नहीं)
(d) अगुरुलघु अरिहन्त भगवान का गुण है। (नहीं)
(e) आत्मा को शुद्ध बनाने वाले ध्यान को ''धर्मध्यान'' कहते हैं। (हाँ)
(f) अनन्त निगोदिया जीवों के तैजस और कार्मण शरीर एक ही होते हैं। (नहीं)
(g) अढ़ाई द्वीप 15 क्षेत्र के पाठ में श्रावक के गुण बताये गये हैं। (हाँ)
(h) संसार की उदासीनता रूप वैराग्य भाव का होना संवेग है। (नहीं)

(i) आठवें अणुव्रत के आठ आगार होते हैं। (हाँ)
(j) भगवान शांतिनाथ के 61,600 साधु थे। (नहीं)
(k) पंखा चलाने से उत्पन्न होने वाली वायु अचित्त होती है। (हाँ)
(l) उपाध्याय जी के 36 गुण होते हैं। (नहीं)
(m) जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए कर्म-पुद्गलों में फल देने की न्यूनाधिक शक्ति स्थिति बंध कहलाती है। (नहीं)
(n) ''मेरे अन्तर भया प्रकाश'' प्रार्थना के रचयिता आचार्य हस्ती हैं। (हाँ)
(o) ''इच्छामि ठामि'' का पाठ ज्ञान के अतिचारों का पाठ है। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	वितिगिच्छा	(क) इच्छामि खमासमणो	दर्शन सम्यक्त्व
(b)	शांतिनाथ भगवान	(ख) प्रत्येक वनस्पतिकाय	चक्रवर्ती
(c)	निरयावलिया	(ग) वेदनीय कर्म	उपांग
(d)	दयावन्त	(घ) आचार्य	मनुष्यायु का कारण
(e)	पिसा हुआ नमक	(च) प्रियमती	सचित्त
(f)	केस वाणिज्जे	(छ) सचित्त	कर्मादान
(g)	धनरथ	(ज) उपांग	प्रियमती
(h)	संलाप	(झ) अचित्त	यतना
(i)	व्यवहार सूत्र	(य) चक्रवर्ती	छेद
(j)	आहार संज्ञा	(र) दर्शन सम्यक्त्व	वेदनीय कर्म
(k)	अगुरुलघु गुण	(ल) यतना	गोत्रकर्म
(l)	आसायणाए	(व) गोत्रकर्म	इच्छामि खमासमणो
(m)	10 लाख	(क्ष) छेद	प्रत्येक वनस्पतिकाय
(n)	छिलका रहित काजू	(त्र) मनुष्यायु का कारण	अचित्त
(o)	मति सम्पदा सहित	(ज्ञ) कर्मादान	आचार्य

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मेरे द्वारा साधु-साध्वीजी की संयम रूप यात्रा की समाधि पूछकर अविनय अशातना के लिये क्षमायाचना की जाती है। इच्छामि खमासमणो
(b) मेरे द्वारा अनर्थ में होने वाली पाप क्रियाओं का त्याग किया जाता है। 8वाँ(अनर्थ दण्ड विरमण)व्रत
(c) मेरे द्वारा संक्षिप्त में तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दना की गई है। तस्स धम्मस्स का पाठ
(d) मैं आत्मा को शुद्ध बनाने वाला ध्यान हूँ। धर्मध्यान
(e) मैं भगवान शांतिनाथ का पुत्र था। चक्रायुध
(f) मुझे खाने से तामसिकता आती है। जमीकन्द

(g) दिवस सम्बन्धी प्रायश्चित्त करने के लिए मेरी प्रतिज्ञा की जाती है। कायोत्सर्ग करने की

(h) मेरे यहाँ से आने वाले जीव में मान और मैथुन संज्ञा अधिक पाई जाती है। मनुष्यगति

(i) मुझे नियमित रूप से प्रतिदिन ग्रहण करने से समुद्र जितना पाप घटकर बूँद के बराबर रह जाता है। 14 नियम

(j) मेरी उत्कृष्ट संख्या 9 हजार करोड़ है। साधु

(k) 'आओ भगवन आओ' प्रार्थना में भगवान का शरणा लेकर मुझे निराकृत करने के लिए कहा है। मोह

(l) मैं सारए वारए धारए इत्यादि अनेक गुण करके सहित हूँ। उपाध्याय जी

(m) शांतिनाथ भगवान ने मेरे यहाँ प्रथम पारणा किया। महाराज सुमित्र

(n) मैं पच्चक्खाण सूत्र का ऐसा पाठ हूँ, जिसमें मेरे चार आगार बतलाये हैं अभत्तट्ठ सूत्र (उपवास)

(o) मेरी साधना से आत्मिक गुणों की पुष्टि एवं आत्मिक शक्ति का विकास होता है। पौषध व्रत

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- **8x2=(16)**

(a) नाणे तह.....तिण्हं गुणव्वयाणं। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. नाणे तह दंसणे चरित्ताचरित्ते, सुए सामाइए, तिण्हं गुत्तीणं, चउण्हं कसायाणं, पंचण्हमणुव्वयाणं, तिण्हं गुणव्वयाणं

(b) असण पाण.....पाडिहारिय। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. असण - पाण - खाइम - साइम - वत्थ - पडिग्गह - कम्बल - पायपुंछणेणं

(c) इस जग.....निवास। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास,
अस्थि मांस मय अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास।

(d) प्रायश्चित्त का पाठ लिखिए।

उ. देवसिय पायच्छित्त विसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

(e) चारों ओर.....दूना है। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. चारों ओर अन्धेरा है, एक सहारा तेरा है,
जीवन सूना-सूना है, पिछड़ा दूना-दूना है।

(f) तिर्यंच पंचेन्द्रिय में कितने उपयोग लेकर जाते हैं व कितने लेकर निकलते हैं ?नाम भी लिखिए।

उ. 5 उपयोग लेकर जाते हैं (2 ज्ञान, 2 अज्ञान, 1 दर्शन)
8 उपयोग लेकर निकलते हैं (3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 2 दर्शन)

(g) चार प्रकार का क्रोध किस-किस के समान बतलाया है ?

उ. 1. अनन्तानुबंधी क्रोध - पर्वत की दरार
2.अप्रत्याख्यानी क्रोध - सूखे तालाब की दरार
3.प्रत्याख्यानावरण क्रोध - बालू रेत में खींची गई लकीर
4.संज्वलन क्रोध - पानी में खींची गई लकीर

(h) शांतिनाथ भगवान ने निर्वाण(मोक्ष) कब और कहाँ प्राप्त किया ?

उ. शांतिनाथ भगवान ने निर्वाण-ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी को सम्मेत-शिखर से निर्वाण को प्राप्त किया।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - **8x3=(24)**

(a) तस्स धम्मस्स का पाठ लिखिए।

उ. तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं।

(b) भय संज्ञा उत्पन्न होने के कारण लिखिए।

उ. 1. अधीरता से (धैर्य के अभाव से), 2. भय मोहनीय कर्म के उदय से, 3. भय का चिन्तन करने से

और 4. भय के दृश्य देखने से।

(c) आयु कर्म का अबाधा काल मानने तथा नहीं मानने के कारण लिखिए।

उ. आयु कर्म में सात कर्मो के अबाधा काल सम्बन्धी नियम लागू नहीं हो पाने के कारण अबाधा काल नहीं माना गया है। किन्तु आयु कर्म बन्धने के बाद जब तक उसका प्रदेशोदय-विपाकोदय, इन दोनों में से कोई भी उदय नहीं हो, तब तक के काल को अर्थात् आयु बन्ध से लेकर मरण तक के काल को अबाधा काल माना जाता है।

(d) माणं सीयं.....कप्फियं। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. मा णं सीयं, मा णं उण्हं, मा णं खुहा, मा णं पिवासा, मा णं वाला, मा णं चोरा, मा णं दंसमसगा, मा णं वाइयं, पित्तियं, कप्फिय

(e) बोधि बीज.....बन जाओ। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. बोधि बीज जो पाया है, तरू बनकर मुस्काया है,
सत्यज्ञान का हो सिंचन, झंझाओं से हो रक्षण।
फल आने की ऋतु आये, भव्य साधना बन जाय

(f) सव्वस्स समण.....अहयं पि। रिक्त स्थान को पूर्ण कीजिए।

उ. सव्वस्स समण संघस्स, भगवओ अंजलिं करिअ सीसे।
सव्वं खमावइत्ता, खमामि सव्वस्स अहयं पि

(g) प्रतिक्रमण के चौथे आवश्यक में पाँच पदों की वन्दना के बाद बोले जाने वाले पाठों के नाम क्रमशः लिखिए।

उ. अनन्त चौबीसी, आयरिय उवज्झाए, अढ़ाई द्वीप, चौरासी लाख जीवयोनि, क्षमापना पाठ, अठारह पाप स्थान।

(h) उपवास के प्रत्याख्यान का पाठ लिखिए।

उ. उग्गए सूरे अभत्तट्ठं पच्चक्खामि, तिविहं पि चउव्विहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं, महत्तरागारेणं, सव्वसमाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 16 जुलाई, 2017)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) प्रतिक्रमण की आज्ञा लेने का पाठ है-

(क) इच्छामि णं भंते (ख) इच्छामि ठामि

(ग) आगमे तिविहे (घ) दर्शन सम्यक्त्व (क)

(b) पन्द्रह कर्मादानों का उल्लेख किस व्रत में किया गया है -

(क) पहला (ख) आठवाँ

(ग) सातवाँ (घ) बारहवाँ (ग)

(c) चौथा आवश्यक है -

(क) सामायिक (ख) चउवीसत्थव

(ग)प्रतिक्रमण (घ) वंदना (ग)

(d) 'भामण्डल' गुण है -

(क) अरिहंत का (ख) सिद्ध का

(ग) आचार्य का (घ) उपाध्याय का (क)

(e) निम्न में से मूल सूत्र है -

(क) आचारांग (ख) चन्दपन्नती

(ग) नन्दी सूत्र (घ) वण्हिदसा (ग)

(f) जिस कर्म के प्रभाव से जीव विविध पर्यायों का अनुभव करे, वह है-

(क) ज्ञानावरणीय (ख) गोत्र

(ग) नामकर्म (घ) अन्तरायकर्म (ग)

(g) अंगोपांग है -

(क) 06 (ख) 03

(ग) 05 (घ) 08 (ख)

(h) असाता वेदनीय कर्म का बंध कितने प्रकार से होता है -

(क) 08 (ख) 12

(ग) 28 (घ) 10 (ख)

(i) देवायु बंध का कारण नहीं है-

(क) सराग संयम (ख) अज्ञान तप

(ग) दयावन्त (घ) अकाम निर्जरा (ग)

(j) वर्षा ऋतु में गर्म पानी कितने प्रहर तक अचित्त रह पाता है-

(क) तीन प्रहर (ख)चार प्रहर

(ग) पाँच प्रहर (घ) आठ प्रहर (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञान के 14 अतिचार होते हैं। (हाँ)

(b) अपनी स्त्री का मर्म प्रकाशित किया हो, यह तीसरे स्थूल का अतिचार है। (नहीं)

(c) बारहवाँ पापस्थान कलह है। (हाँ)

(d) पौषध कम से कम पाँच प्रहर के लिये ग्रहण किया जाता है। (हाँ)

(e) निशीथ सूत्र छेद सूत्रों का एक भेद है। (हाँ)

(f) दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ हैं। (हाँ)

(g) भगवान शांतिनाथ के धर्मपरिवार में 62,000 साध्वियाँ थीं। (नहीं)

(h) भगवान श्री शांतिनाथजी 16वें तीर्थंकर थे। (हाँ)

(i) 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' प्रार्थना के रचयिता आचार्य श्री हस्ती है। (हाँ)

(j) 'रतालू' जमीकंद का एक भेद है। (हाँ)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मैं सम्यक्त्व ग्रहण करने का पाठ हूँ।	दर्शन सम्यक्त्व/अरिहंतो महदेवो का पाठ
(b)	मैं सातवें व्रत का 26वाँ बोल हूँ।	दव्वविहि
(c)	मेरा एक अतिचार कालाइक्कमे है।	बारहवाँ व्रत
(d)	मैं 36 गुण एवं 8 सम्पदा सहित हूँ।	आचार्य
(e)	मैं अंतिम आवश्यक हूँ।	प्रत्याख्यान
(f)	मेरी उत्कृष्ट स्थिति 70 कोड़ाकोड़ी सागरोपम है।	मोहनीय कर्म
(g)	मैं उपयोग का 10वाँ भेद हूँ।	अचक्षुदर्शन
(h)	मैने राजा मेघरथ के भव में तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया।	भगवान शांतिनाथ
(i)	मेरा अपर नाम गजेन्द्र भी है।	आचार्य श्री हस्ती
(j)	खुले मुहँ बोलने से तथा फूँक मारने से मेरी विराधना होती है।	वायुकाय

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। 14x2=(28)

(a) समकित के कोई दो अतिचार लिखिए।

उ 1 श्री जिन वचन में शंका की हो 2 परदर्शन की आकांक्षा की हो, 3 धर्म के फल में संदेह किया हो, 4 पर पाखण्डी की प्रशंसा की हो, 5 पर पाखण्डी का परिचय किया हो।

(b) 99 अतिचारों का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

उ 14 ज्ञान के, 5 समकित के, 60 बारह व्रतों के, 15 कर्मादान के, 5 संलेखना (तप) के।

(c) तस्स सव्वस्स का पाठ लिखिए।

उ तस्स सव्वस्स देवसियस्स, अइयारस्स, दुब्भासिय-दुच्चिन्तिय-दुच्चिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि।

(d) पाँचवें व्रत में श्रावक-श्राविकाएँ किन-किन पदार्थों की मर्यादा रखते हैं ?

उ पाँचवें अणुव्रत में श्रावक-श्राविकाएँ, क्षेत्र-खुली जमीन, वस्तु-मकान, दुकान आदि, हिरण्य-सुवर्ण-सोना, चाँदी, हीरे-जवाहरात आदि, धन-धान्य-रूपये-पैसे, बोण्ड, शेयर, अनाज आदि, द्विपद-चतुष्पद-परिवार, नौकरादि, गाय-भैंस आदि पशु-पक्षी, कुविय-घरेलू उपकरण, फर्नीचर आदि पदार्थों की मर्यादा करके शेष परिग्रह का त्याग करता है।

(e) चार मूल सूत्र के नाम लिखिए।

उ 1 उत्तराध्ययन सूत्र 2 दशवैकालिक सूत्र

3 नंदी सूत्र 4 अनुयोगद्वार सूत्र

(f) प्रतिक्रमण का मूल उद्देश्य क्या है ?

उ ज्ञान दर्शन चारित्राचारित्र व तप पर लगे अतिचारों की शुद्धि करना।

(g) गुणस्थान किसे कहते हैं ?

उ मोह और योग के निमित्त से आत्म विकास की बनने वाली तरतम अवस्थाओं को गुणस्थान कहते हैं।

(h) नोकषाय मोहनीय के भेद लिखिए।

उ हास्य, रति, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा, पुरुषवेद, स्त्रीवेद और नपुंसक वेद।

(i) सातवीं नारकी में उपयोग लिखिए।

उ 3 ज्ञान, 3 अज्ञान, 3 दर्शन

(j) माता अचिरादेवी ने अपने पुत्र का नाम शांतिनाथ क्यों रखा ?

उ माता अचिरादेवी के गर्भ में प्रभु का आगमन होते ही महामारी का भयंकर प्रकोप शांत हो गया, अतः नामकरण संस्कार के समय आपका नाम शांतिनाथ रखा गया।

(k) भगवान शांतिनाथ को केवल ज्ञान की प्राप्ति कब एवं किस नक्षत्र में हुई ?

उ पोष शुक्ला नवमी को भरणी नक्षत्र में केवलज्ञान और केवलदर्शन की प्राप्ति हुई।

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ चारों ओर अंधेरा है, एक सहारा तेरा है,

जीवन सूना-सूना है, पिछड़ा दूना-दूना है।

(m) नवकारसी लेने का पाठ लिखिए।

उ उग्गए सूरे नमोक्कारसहियं पच्चक्खामि चउव्विह पि आहारं

असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अन्नत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं वोसिरामि।

(n) पृथ्वीकाय की विराधना कैसे होती है ?

उ नींव आदि खुदवाना, पत्थर आदि को तोड़ना इन कार्यों में स्पष्टतः पृथ्वीकाय की विराधना होती है।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन वाक्यों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) आठवें व्रत के प्रमुख आगारों के नाम लिखिए।

उ आठ आगार- आए वा, राए वा, नाए वा, परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जक्खे वा, भूए वा, एत्तिएहि, आगारेहिं अण्णत्थ।

(b) पौषध व्रत के पाँच अतिचार लिखिए।

उ 1 अप्पडिलेहिय- दुप्पडिलेहिय सेज्जासंथारए,

2 अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय सेज्जासंथारए,

3 अप्पडिलेहिय, दुप्पडिलेहिय उच्चार पासवण भूमि,

4 अप्पमज्जिय दुप्पमज्जिय उच्चार पासवण भूमि,

5 पोसहस्स सम्मं अणणुपालणया।

(c) अरिहंत भगवान के 12 गुण लिखिए।

उ

1 अनन्त ज्ञान,	2 अनन्त दर्शन,	3 अनन्त चारित्र,	4 अनन्त बल वीर्य,
5 दिव्य ध्वनि,	6 भामण्डल,	7 स्फटिक सिंहासन,	8 अशोक वृक्ष,
9 कुसुम वृष्टि,	10 देवदुन्दुभि,	11 छत्र धरावे,	12 चँवर बिजावें।

(d) **साधुजी महाराज के 27 गुण लिखिए।**

उ पाँच महाव्रत वाले, पाँच इन्द्रिय जिते, चार कषाय टाले, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मन समाधारणया, वय समाधारणया, काय समाधारणया, नाण सम्पन्ना, दंसण सम्पन्ना, चारित्त सम्पन्ना, वेदनीय समाअहियासन्निया, मारणंतिय समाअहियासन्निया। ऐसे 27 गुण करके सहित है।

(e) **समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ लिखिए।**

उ गंठिसहियं, मुट्ठिसहियं, नमुक्कारसहियं, पोरिसियं, साड्ढपोरिसियं,

चउविहं पि आहारं असणं, पाणं, खाइमं, साइमं, अपनी-अपनी

धारणा प्रमाणे पच्चक्खाण, अण्णत्थऽणाभोगेणं, सहसागारेणं,

महत्तरागारेणं, सव्व समाहिवत्तियागारेणं, वोसिरामि।

(f) **''जं, ...भणता, गुणता'' उक्त पाठ को पूर्ण करके लिखिए।**

उ जं-वाइद्धं वच्चामेलियं हीणक्खरं, अच्चक्खरं, पयहीणं, विणयहीणं, जोगहीणं, घोसहीणं, सुट्ठुदिण्णं, दुटठुपडिच्छियं, अकाले कओ सज्झाओ, काले न कओ सज्झाओ, असज्झाइए सज्झायं, सज्झाए न सज्झायं, भणता, गुणता।

(g) **छेदोपस्थापनीय तथा यथाख्यात चारित्र को परिभाषित कीजिए।**

उ <u>छेदोपस्थापनीय चारित्र -</u> यह चारित्र प्रथम और अंतिम तीर्थंकर के शासनकाल में होता है। महाव्रतों में कोई दोष लगने पर अथवा बड़ी दीक्षा दिलाने पर पुनः महाव्रतों में आरोपित करना ' छेदोपस्थापनीय चारित्र' है।

<u>यथाख्यात चारित्र-</u> राग, द्वेष, कषाय, मोह आदि के उदय से पूर्णतः मुक्त होकर तीर्थंकर भगवंतों द्वारा जो शुद्ध चारित्र का स्वरूप प्रतिपादित किया गया है, उसे उसी रूप में आराधन करना, पालन करना 'यथाख्यात चारित्र' है।

(h) **मोहनीय कर्म बंध के 6 कारण लिखिए।**

उ 1 तीव्र क्रोध करने से। 2 तीव्र मान करने से।

3 तीव्र माया करने से। 4 तीव्र लोभ करने से।

5 तीव्र दर्शन मोहनीय से 6 तीव्र चारित्र मोहनीय से।

(i) **संज्ञा किसे कहते हैं ? संज्ञा के भेदों के नाम लिखिए।**

उ ज्ञानावरणीय और दर्शनावरणीय के क्षयोपशम से एवं वेदनीय और मोहनीय कर्म के उदय से आत्मा में होने वाली आहारादि की इच्छा (अभिलाषा) को 'सज्ञा' कहते है।

भेद- 1. आहार संज्ञा 2 भय संज्ञा 3 मैथुन संज्ञा

4 परिग्रह संज्ञा 5 क्रोध संज्ञा 6 मान संज्ञा

7 माया संज्ञा 8 लोभ संज्ञा 9 लोकसंज्ञा 10 ओघ संज्ञा।

(j) श्रावक का दूसरा मनोरथ लिखिए।

उ वह दिवस धन्य होगा जब मैं संसार की मोह-माया और विषय वासना का त्याग करके साधु जीवन स्वीकार करूँगा। अहिंसादि पाँच महाव्रतों को धारण कर, परीषह-उपसर्गों को समभाव से सहन कर जिस दिन द्रव्य व भाव से मुनि पद की ऊँची भूमिका में विचरण करूँगा, वह दिवस मेरे लिये परम मंगलकारी होगा।

(k) भगवान शांतिनाथजी के जीवन से मिलने वाली कोई तीन शिक्षाएँ लिखिए।

उ 1 अहिंसा एवं परोपकार के कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिए।

2 उदारता गुण को बढ़ाने हेतु एक-दूसरे का सहयोगी बनना चाहिए।

3 परीक्षा एवं प्रतिकूलता की घड़ियों में भी अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ता से पूर्ण करना चाहिए।

4 करूणाभाव को बढ़ाने हेतु यथाशक्ति क्रियात्मक सेवा को अपनाना चाहिए।

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ तन धन परिजन सब ही पर हैं, पर की आश निराश,

पुद्गल को अपना कर मैंने, किया स्वत्व का नाश।

(m) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ बोधि बीज जो पाया है, तरू बनकर मुस्काया है,

सत्यज्ञान का हो सिंचन, झंझाओं से हो रक्षण।

फल आने की ऋतु आये, भव्य साधना बन जाये,

पत्रित पुष्पित और फलित वो, करूणा रस बरसाओ।।

(n) तेउकाय की सचित्तता के प्रमाण लिखिए।

उ तेउकाय- जलती हुई अग्नि, गैस के चूल्हे आदि तो प्रत्यक्ष सिद्ध है ही, बिजली की सचित्तता के सम्बंध में अनेक प्रमाण हैं। सेल की धारा में भी वही विद्युत् कम मात्रा में लगभग 1.5 वोल्ट के रूप में रहती है, इसलिये चालू सेल, सेल्यूलर फोन, बैटरी, सेल की घड़ी आदि सचित्त मानी जाती है।

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 29 जुलाई, 2018)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) संक्षिप्त प्रतिक्रमण का पाठ है-
(क) इच्छामि णं भंते (ख) इच्छामि ठामि
(ग) आगमे तिविहे (घ) दंसण समकित (ख)

(b) साधु-साध्वीजी के संयम रूप यात्रा की समाधि (साता) पूछकर अविनय आशातना के लिए क्षमायाचना करने का पाठ है -
(क) तस्स धम्मस्स का पाठ (ख) तस्स सव्वस्स का पाठ
(ग) इच्छामि खमासमणो का पाठ (घ) इच्छामि ठामि का पाठ (ग)

(c) मोटी (स्थूल) चोरी का त्याग करना श्रावक का अणुव्रत है -
(क) पहला (ख) तीसरा
(ग) पाचवाँ (घ) सातवाँ (ख)

(d) ऊँची, नीची, तिरछी दिशाओं में गमनागमन की मर्यादा किस व्रत से की जाती है -
(क) आठवाँ (ख) पाँचवाँ
(ग) छठा (घ) बारहवाँ (ग)

(e) दर्शन मोहनीय की प्रकृतियाँ हैं -
(क) 28 (ख) 2
(ग) 9 (घ) 3 (घ)

(f) संज्वलन कषाय में मरने वाला जीव किस गति में जाता है-
(क) देवगति (ख) मनुष्य गति
(ग) तिर्यंचगति (घ) उपर्युक्त सभी में (क)

(g) मेघरथ का जीव किस महारानी की कुक्षि में उत्पन्न हुआ -
(क) प्रियमति (ख) अचिरा
(ग) त्रिशला (घ) सुमंगला (ख)

(h) 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' प्रार्थना के रचयिता हैं -
(क) आचार्य हीरा (ख) मुनि गौतम
(ग) आचार्य हस्ती (घ) उपाध्याय श्री मान (ग)

(i) बर्फ मिलाकर ठंडा किया आमरस बर्फ गलने से कितनी घड़ी तक सचित्त रहता है-
(क) 2 घड़ी (ख) 1घड़ी
(ग) 3 घड़ी (घ) 5 घड़ी (ख)

(j) 'वस्तु में मिलावट करना' किस व्रत का अतिचार है-
(क) तीसरे (ख)दूसरे
(ग) पाँचवें (घ) सातवें (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) दर्शन समकित के पाँच अतिचार होते हैं। (हाँ)
(b) मुखरी वचन बोला हो, दसवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)
(c) चउवीसत्थव तीसरा आवश्यक है। (नहीं)
(d) संवर करने और 14 नियम ग्रहण करने का पाठ दसवाँ देशावगासिक व्रत का पाठ है। (हाँ)
(e) अनन्तानुबंधी क्रोध पर्वत की दरार के समान है। (हाँ)
(f) ईर्ष्याभाव मनुष्यायु बन्धने का कारण है। (नहीं)
(g) 'आओ भगवन आओ' प्रार्थना में मोह को निराकृत करने की प्रेरणा है। (हाँ)
(h) 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' प्रार्थना में ममता से संताप उठाने के बारे में कहा गया है। (हाँ)

(i) अग्नि पर छोंकते ही नीचे उतारी गई मोगरी पूर्ण रूप से अचित्त न होने पर भी सचित्त के त्यागी के लिए ग्रहण करने योग्य है। (नहीं)

(j) शंख तेइन्द्रिय जाति का जीव है। (नहीं)

प्र.3 मुझे पहचानो :- **10x1 = (10)**

(a)	मेरा एक अतिचार सदारमंतभेए है।	दूसरा अणुव्रत/मृषावाद विरमण व्रत
(b)	मैं सातवाँ कर्मादान हूँ।	लक्खवाणिज्जे
(c)	मैं 25 गुणों से युक्त हूँ।	उपाध्याय
(d)	मेरे द्वारा कायोत्सर्ग करने की प्रतिज्ञा की जाती है।	प्रायश्चित्त का पाठ
(e)	मेरी जघन्य स्थिति 12 मूहूर्त्त है।	वेदनीय
(f)	मैं उपयोग का 12वाँ भेद हूँ।	केवलदर्शनोपयोग
(g)	मेरा पुत्र मेघरथ है।	धनरथ
(h)	मेरा अपर नाम गजेन्द्र है।	आचार्य हस्ती
(i)	सेल्यूलर फोन, मोबाईल फोन से मेरी विराधना होती है।	तेउकाय
(j)	मैं लोकालोकव्यापी अनन्त प्रदेशी हूँ।	आकाशास्तिकाय

प्र.4 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिए। **14x2 = (28)**

(a) चौथे स्थूल के दो अतिचार लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो-

1. इत्तरियपरिग्गहिया से गमन किया हो।
2. अपरिग्गहिया से गमन किया हो।
3. अनंग क्रीड़ा की हो।
4. पराये का विवाह नाता कराया हो।
5. काम-भोग की तीव्र अभिलाषा की हो।

(b) तस्स धम्मस्स का पाठ लिखिए।

उ. तस्स धम्मस्स केवलिपण्णत्तस्स अब्भुट्ठिओमि आराहणाए विरओमि विराहणाए तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं।

(c) चार छेद-सूत्रों के नाम लिखिए।

उ. 1. दशाश्रुत स्कन्ध 2. वृहत्कल्प
3. व्यवहार सूत्र 4. निशीथ सूत्र

(d) ग्यारहवाँ प्रतिपूर्ण पौषध व्रत के कोई दो अतिचार लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई दो-

1. पौषध में शय्या संथारा न देखा हो, अच्छी तरह से नहीं देखा हो।
2. पूँजा न हो, अच्छी तरह से नहीं पूँजा हो।
3. प्रमार्जन न किया हो या अच्छी तरह से न किया हो।
4. उच्चार-पासवण की भूमि को न देखी हो अथवा अच्छी तरह से न देखी हो।
5. उपवास युक्त पौषध का सम्यक् प्रकार से पालन न किया हो।

(e) कर्मादान का अर्थ लिखिए।

उ. अधिक हिंसा वाले धन्धों से आजीविका चलाना कर्मादान है अथवा जिन संसाधनों से कर्मों का निरन्तर बन्ध होता हो, उन्हें कर्मादान कहते हैं।

(f) दर्शनावरणीय कर्म की प्रकृतियाँ लिखिए।

उ. दर्शनावरणीय की नो प्रकृतिया- 1. निद्रा, 2. निद्रा-निद्रा, 3. प्रचला, 4. प्रचला-प्रचला, 5. स्त्यानगृद्धि (स्त्यानर्द्धि), 6. चक्षुदर्शनावरणीय, 7. अचक्षुदर्शनावरणीय, 8. अवधिदर्शनावरणीय और 9. केवलदर्शनावरणीय।

(g) अनन्तानुबंधी कषाय में मरने वाला जीव किस गति में जाता है ?

उ. नरक गति में।

(h) प्रत्येक प्रकृतियों के नाम लिखिए।

उ. उपघात, पराघात, आतप, उघोत, अगुरुलघु, उच्छवास, निर्माण,तीर्थंकर।

(i) छः संस्थानों के नाम लिखिए।

उ. समचतुरस्र, न्यग्रोधपरिमण्डल, सादि, वामन, कुब्ज, हुण्डक

(j) शांतिनाथजी का नामकरण कैसे हुआ ?

उ. शांतिनाथ भगवान के अचिरा देवी के गर्भ में आते ही महामारी का महाभयंकर प्रकोप शांत हो गया, इसलिए शांतिनाथ नाम रखा गया।

(k) शांतिनाथजी के पुत्र का क्या नाम था ? पुत्र का पूर्वभव का नाम भी लिखिए।

उ. शांतिनाथजी के पुत्र का नाम चक्रायुध था। पुत्र का पूर्वभव का नाम दृढ़रथ था।

(l) वनस्पतिकायिक जीवों के भेद लिखिए।

उ. वनस्पतिकायिक जीवों के तीन भेद- सूक्ष्म, साधारण, प्रत्येक।

(m) पृथ्वीकाय की विराधना किस कारण से होती है ?

उ. 1. नींव खोदने से 2.पत्थर तोड़ने से।

(n) तेइन्द्रिय जीवों के नाम लिखिए।

उ. चींटी, खटमल, जूँ, लीख, इली, कंथूआ, चाचड, गजाई आदि।

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - 14x3=(42)

(a) ग्यारह अंग के नाम लिखिए।

उ. 1. आचारांग, 2. सूयगडांग, 3. ठाणांग, 4. समवायांग, 5. भगवती, 6. ज्ञाताधर्मकथा, 7.उवासगदसा, 8. अंतगडदसा, 9. अणुत्तरोववाइय, 10. प्रश्न व्याकरण, 11. विपाक सूत्र।

(b) सिद्ध भगवान के आठ गुण लिखिए।

उ. 1. अनन्त ज्ञान 2. अनन्त दर्शन 3. निराबाध सुख 4. क्षायिक समकित
5. अटल अवगाहना 6. अमूर्त 7. अगुरुलघु 8. अनन्त आत्म-सामर्थ्य

(c) दूसरे व्रत के अतिचार लिखिए।

उ. सहस्सब्भक्खाणे, रहस्सब्भक्खाणे, सदारमंतभेए, मोसोवएसे, कूडलेहकरणे।

(d) क्षमापना का पाठ लिखिए।

उ. खामेमि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा खमन्तु मे।
मित्ती मे सव्व भूएसु, वेरं मज्झं न केणइ।।
एवमहं आलोइय निन्दिय गरिहिय दुगंच्छियं सम्मं
तिविहेणं पडिक्कंतो वंदामि जिण चउव्वीसं।।

(e) छः आवश्यकों के नाम लिखिए।

उ. 1. सामायिक 2. चउव्वीसत्थव 3. वंदना 4. प्रतिक्रमण
5. कायोत्सर्ग 6. प्रत्याख्यान

(f) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

उ. अरिहंतो महदेवो, जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो, जिण पण्णत्तं तत्तं इअ सम्मत्तं मए गहियं।
परमत्थ संथवो वा, सुदिट्ठ परमत्थ सेवणा वावि, वावण्ण कुदंसण वज्जणा, य समत्त सद्दहणा।।

(g) नरकायु बंध के कारण लिखिए।

उ. 1. महा आरम्भ करने से 2. महा परिग्रह करने से
3. मद्यमांस का सेवन करने से 4. पंचेन्द्रिय जीव की घात करने से

(h) ओघ संज्ञा को परिभाषित कीजिए।

उ. बिना सोचे विचारे किसी कार्य को धुन में करने की प्रवृत्ति होना ओघ संज्ञा है। जैसे-वृक्ष पर चढ़ना,

बैठे-बैठे पैर हिलाना, तिनके तोड़ना आदि।

(i) श्रावक का पहला मनोरथ लिखिए।

उ. वह दिवस धन्य होगा जब 9 प्रकार के बाह्य एवं 14 प्रकार के आभ्यन्तर परिग्रह जो आत्मा के सबसे बड़े बंधन है, उनको त्याग कर प्रमोद भाव अनुभव करूँगा, वह दिन मेरे लिए परम कल्याणकारी होगा।

(j) चौदह नियमों का चिन्तन करने से क्या लाभ होता है ?

उ. चौदह वस्तुओं की मर्यादा रखकर उसके उपरान्त का त्याग कर लेने से तथा प्रतिदिन ग्रहण करने से समुद्र जितना पाप घटकर बूँद के बराबर रह जाता है।

(k) शांतिनाथजी के जन्म का वर्णन कीजिए।

उ. मेघरथ का जीव सर्वार्थ सिद्धविमान से च्यवन कर महारानी अचिरा की कुक्षि में आया, माता ने गर्भकाल में चौदह स्वप्न देखे। ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी को मध्यरात्रि के समय स्वर्ण के समान वर्ण वाले पुत्र का जन्म हुआ।

(l) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ. निज को इतना भूल गया, बिल्कुल ही बन धूल गया
आसमान का तारा हूँ, इस धरती से न्यारा हूँ
इस जग से विच्छेद मिले, तेरा मुझे अभेद मिले
अपनी ऊँची श्रेणी में अब, मुझको भी बिठलाओ।।

(m) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-
इस जग की ममता ने मुझको, डाला गर्भावास
अस्थि मांसमय अशुचि देह में, मेरा हुआ निवास
ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास
भेद ज्ञान की पैनी धार से, काट दिया वह पाश।।

(n) मनः पर्यव ज्ञान को परिभाषित कीजिए।
सम्यग्दर्शन के साथ इन्द्रिय और मन की सहायता के बिना सीधे आत्मा से संज्ञी जीवों के मनोगत भावों को जानना मनःपर्यव ज्ञान है।

कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 21 जुलाई, 2019)

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञान के अतिचारों का पाठ है-
(क) इच्छामि ठामि (ख) आगमे तिविहे का पाठ
(ग) इच्छामि णं भंते (घ) दर्शन सम्यक्त्व का पाठ (ख)

(b) साधु साध्वियों की अविनय आशातना के लिए क्षमा याचना करने का पाठ है-
(क) तस्स सव्वस्स (ख) दंसण समत्त का पाठ
(ग) इच्छामि खमासमणो का पाठ (घ) इच्छामि ठामि का पाठ (ग)

(c) ''तृष्णा पर अंकुश लगाने हेतु'' दिशाओं में गमनागमन की मर्यादा के लिए व्रत है-
(क) दिशिव्रत (ख) परिग्रह विरमण व्रत
(ग) उपभोग परिभोग व्रत (घ) अनर्थदण्ड विरमण व्रत (क)

(d) प्रत्याख्यानावरण कषाय में मरने वाला जीव गति प्राप्त करता है-
(क) देवगति (ख) नरकगति
(ग) मनुष्यगति (घ) तिर्यंचगति (ग)

(e) वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति है-
(क) अन्तर्मुहूर्त्त (ख) 12 मुहूर्त्त
(ग) आठ मुहूर्त्त (घ) एक मुहूर्त्त (ख)

(f) संज्ञा का थोकड़ा किस सूत्र से लिया गया है-
(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) दशवैकालिक सूत्र
(ग) अनुयोग द्वार सूत्र (घ) पन्नवण्णा सूत्र (घ)

(g) भगवान शान्तिनाथ जी ने किस नक्षत्र में केवलज्ञान और केवल दर्शन प्राप्त किया-
(क) स्वाति नक्षत्र (ख) भरणी नक्षत्र
(ग) पुष्य नक्षत्र (घ) इनमें से कोई नहीं (ख)

(h) ''मेरे अन्तर भया प्रकाश'' नामक प्रार्थना के रचयिता हैं-
(क) आचार्य हस्ती (ख) आचार्य हीरा
(ग) उपाध्याय मान (घ) गौतम मुनि (क)

(i) धोवन पानी कितने प्रहर उपरान्त काम में नहीं लिया जाता है-
(क) 3 प्रहर (ख) 4 प्रहर
(ग) 5 प्रहर (घ) 2 प्रहर (ग)

(j) वनस्पतिकायिक जीवों के कुल भेद हैं-
(क) 2 (ख) 3
(ग) 4 (घ) 6 (ख)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **10x1 = (10)**

(a) ज्ञान के 14 अतिचार होते हैं। (हाँ)
(b) ''उपभोग-परिभोग अधिक बढ़ाया हो'' दसवें व्रत का अतिचार है। (नहीं)
(c) चौदहवाँ पाप स्थान परपरिवाद है। (नहीं)
(d) पौषध कम से कम 5 प्रहर के लिए ग्रहण किया जाता है। (हाँ)
(e) दर्शन मोहनीय की तीन प्रकृतियाँ होती हैं। (हाँ)
(f) 'संज्वलन मान' पानी में खींची गई लकीर के समान है। (नहीं)
(g) जीव के द्वारा ग्रहण किये हुए कर्म पुद्गलों में भिन्न-भिन्न स्वभाव का होना प्रकृति बंध है। (हाँ)
(h) असाता वेदनीय कर्म 12 प्रकार से बंधता है। (हाँ)
(i) सोलहवें तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ जी हैं। (हाँ)
(j) मेघरथ का जीव सर्वार्थसिद्ध विमान में उत्पन्न हुआ। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिएः- 10x1=(10)

(a)	केश वाणिज्जे	(क) 99	कर्मादान
(b)	मरणासंसप्पओगे	(ख) उपवास	संलेखणा का अतिचार
(c)	पमायायरिये	(ग) दर्शनावरणीय प्रकृति	अनर्थदण्ड विरमण व्रत
(d)	अतिचार	(घ) अनर्थदण्ड विरमण व्रत	99
(e)	अरति	(च) पाँच	नोकषाय मोहनीय
(f)	गर्म	(छ) जमीकन्द	स्पर्श
(g)	विगय	(ज) स्पर्श	पाँच
(h)	स्त्यानगृद्धि	(झ) नो कषाय मोहनीय	दर्शनावरणीय की प्रकृति
(i)	अभत्तट्ठं	(य) संलेखणा का अतिचार	उपवास
(j)	रतालू	(र) कर्मादान	जमींकन्द

प्र.4 मुझे पहचानो :- 10x1=(10)

(a)	मेरा एक अतिचार 'मोसोवएसे' है।	दूसरा अणुव्रत
(b)	मैं तीसरा आवश्यक हूँ।	वंदना
(c)	मैं सातवें व्रत का 25वाँ बोल हूँ।	सचित्तविहि
(d)	मैं ज्ञानावरणीय कर्म की पाँचवीं प्रकृति हूँ।	केवल ज्ञानावरणीय
(e)	मैं संस्थान का तीसरा भेद हूँ।	सादि
(f)	मैं मोहनीय कर्म की मुख्य प्रकृतियों का दूसरा भेद हूँ।	चारित्र मोहनीय
(g)	मेरे प्रभाव से जीव उच्च-नीच कुलों में उत्पन्न होता है।	गोत्र कर्म
(h)	मेरे धर्म परिवार में 36 गणधर थे।	शान्तिनाथ
(i)	'खाने के लिए तू दूसरी वस्तु से भी अपना पेट भर सकता है।' किसने कहा?	मेघरथ ने
(j)	'नींव खुदवाना' मेरी विराधना है।	पृथ्वीकाय

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो पंक्तियों में दीजिएः - 12x2=(24)

(a) तीसरे स्थूल के दो अतिचार लिखिए।

उ. नोटः- इनमें से कोई दो अतिचार-
1. चोर की चुराई हुई वस्तु ली हो। 2. चोर को सहायता दी हो। 3. राज्य के विरूद्ध कार्य किया हो।
4. कूड़ा तौल, कूड़ा माप किया हो। 5. वस्तु में भेल-संभेल किया हो।

(b) तस्स सव्वस्स का मूल पाठ लिखिए।

उ. तस्स सव्वस्स देवसियस्स, अइयारस्स दुब्भासिय
दुच्चिन्तिय-दुच्चिट्ठियस्स आलोयंतो पडिक्कमामि।

(c) नवमें सामायिक व्रत के पाँच अतिचार लिखिए।

उ. 1. मणदुप्पणिहाणे 2. वयदुप्पणिहाणे 3. काय दुप्पणिहाणे 4. सामाइयस्स सइ अकरणया
5. समाइयस्स अणवट्ठियस्स करणया।

(d) प्रायश्चित्त का मूल पाठ लिखिए।

उ. देवसिय पायच्छित्तविसोहणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

(e) प्रतिक्रमण का मूल नाम क्या है ?

उ. आवश्यक सूत्र

(f) संवर तत्त्व किसे कहते हैं ?

उ. जिन कारणों से आत्मा पर आने वाले कर्म पुद्गलों को रोका जा सके, उन्हें संवर तत्व कहते है।

(g) 8 प्रत्येक प्रकृति के नाम लिखिए।

उ. उपघात, पराघात, आतप, उद्योत, अगुरुलघु, उच्छवास, निर्माण और तीर्थंकर नाम

(h) मनुष्यायु बंध के चार कारण लिखिए।

उ. 1. प्रकृति से सरल 2. प्रकृति से विनीत 3. दयावन्त 4. मत्सर (ईर्ष्या भाव से रहित)

(i) भगवान शान्तिनाथजी का विवाह कब तथा किसके साथ हुआ ?

उ. युवावस्था में अनेक राजकन्याओं के साथ में।

(j) भगवान शान्तिनाथजी के जीवन से मिलने वाली दो शिक्षा लिखिए।

नोटः इनमें से कोई दो-

1. अहिंसा एवं परोपकार के कार्यो को प्राथमिकता देनी चाहिए।

2. करुणा भाव बढ़ाने हेतु यथाशक्ति क्रियात्मक सेवा को अपनाना चाहिए।

3. उदारता गुण को बढ़ाने हेतु एक-दूसरे का सहयोगी बनना चाहिए।

4. परीक्षा एवं प्रतिकूलता की घड़ियों में भी अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ता से पूर्ण करना चाहिए।

(k) सचित्त-अचित्त की परिभाषित कीजिए।

उ. जो जीव सहित है वह सचित्त, जो जीव रहित है वह अचित्त कहलाता है।

(l) जमीकन्द का त्याग क्यों किया जाना चाहिए ?

उ. जमींकन्द आदि का त्याग कर अनन्त जीवों की विराधना से बचा जा सकता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर तीन-चार पंक्तियों में लिखिए : - **12x3 = (36)**

(a) लक्षण किसे कहते हैं ? इसके भेद लिखिए।

उ. श्रद्धा होने पर जो गुण आवश्यक रूप से पाये जाने चाहिए, वे लक्षण कहलाते हैं।
सम, संवेग, निर्वेद, अनुकम्पा, आस्था।

(b) इच्छामि णं भंते का पाठ लिखिए।

उ. इच्छामि णं भंते! तुब्भेहिं अब्भणुण्णाए समाणे देवसियं
पडिक्कमणं ठाएमि देवसिय नाण दंसण चरित्ताचरित्त तव
अइयार चिंतणत्थं करेमि काउस्सग्गं।

(c) दसवां देशावगासिक व्रत के पाँच अतिचार लिखिए।

उ. 1. नियमित सीमा के बाहर की वस्तु मंगवाई हो
2. भिजवायी हो 3. शब्द करके चेताया हो
4. रूप दिखाकर अपने भाव प्रकट किये हो
5. कंकर आदि फैंक कर बुलाया हो।

(d) दंसण समत्त पाठ के पाँच अतिचार लिखिए।

उ. 1. संका, 2. कंखा, 3. वितिगिच्छा, 4. परपासंड पसंसा, 5. परपासंड संथवो।

(e) सिद्धों के आठ गुण लिखिए।

उ. 1. अनन्त ज्ञान, 2. अनन्त दर्शन, 3. अनन्त सुख, 4. क्षायिक समकित, 5. अटल अवगाहना
6. अमूर्त्त, 7. अगुरु लघु, 8. अनन्त आत्म सामर्थ्य।

(f) आठ सम्पदा के नाम लिखिए।

उ. 1. आचार सम्पदा, 2. श्रुत सम्पदा, 3. शरीर सम्पदा, 4. वचन सम्पदा 5. वाचना सम्पदा
6. मति सम्पदा, 7. प्रयोग मति सम्पदा, 8. संग्रह परिज्ञा सम्पदा।

(g) ग्यारह अंगों के नाम लिखिए।

उ. आचारांग, सूयगडांग, ठाणांग, समवायांग, भगवती, ज्ञाताधर्मकथा, उवासगदसा, अंतगडदसा, अणुत्तरोवाइय, प्रश्न व्याकरण, विपाक सूत्र।

(h) गुणस्थान किसे कहते हैं ? मिथ्यात्व गुणस्थान को समझाइए।

उ. मोह और योग के निमित्त से आत्म-विकास की बनने वाली तरतम अवस्था को गुणस्थान कहते है।
मिथ्यात्व गुणस्थान-देव गुरु धर्म और आत्म स्वरूप के बारे में यथार्थ श्रद्धान नहीं होना मिथ्यात्व गुणस्थान है।

(i) भगवान शान्तिनाथ जी के निर्वाण के बारे में लिखिए।

उ. भ. शान्तिनाथ ने अपना अन्त समय समीप जानकार नौ सौ साधुओं के साथ एक मास का अनशन किया और ज्येष्ठ कृष्णा त्रयोदशी को भरणी नक्षत्र में 4 अघाति कर्मो का क्षय कर सम्मेत शिखर पर सिद्ध-बुद्ध मुक्त होकर निर्वाण पद प्राप्त किया।

(j) रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए-

उ. काल अनंत रुला भव वन में, बंधा मोह के पाश।
काम क्रोध मद लोभ भाव से, बना जगत का दास।
तन धन परिजन सब ही पर है, पर की आश निराश।
पुद्गल को अपनाकर मैंने, किया स्वत्व का नाश।।

(k) लिया तुम्हारा शरणा है, मोह निराकृत करना है।
इसने मुझको मारा है, तुमने इसे संहारा है।
तब ही जिन कहलाते हो, सबको राह दिखाते हो,
बनकर निर्देशक इस रण में, मुझको विजय दिलाओ।

(l) बोधि बीज जो पाया है, तरु बनकर मुस्काया है।
सत्य ज्ञान का हो सिंचन, झंझाओं से हो रक्षण।
फल आने की ऋतु आये, भव्य साधना बन जाये,
पत्रित पुष्पित और फलित वो, करुणा रस बरसाओ।।